आज का दैनिक

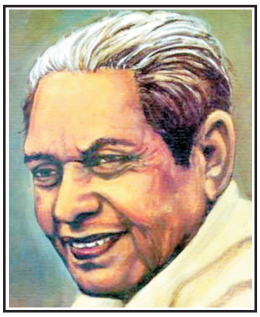

''देना अखबार देना''
साथी ने बिना कुछ बोले पढ़ना बंद करके
हिंदी का दैनिक वह,
मुझ तक बढ़ा दिया।
पहले ही नजर जो पड़ी
देखा रणचण्डी पर
किसी भक्त दल ने
आज सहस्रों को चढ़ा दिया।

पन्ना उलटकर देखा
उसमें भी लेखा था,
मरने का, मारने का
जीतने का, हारने का
करुणाहीन स्वर में
कहीं धमकी थी मारने की
और यदि शरण में आओ
शेखी थी, तारने की
और कहीं लिखा था
अन्न का अभाव है
और कहीं कारण था,
अन्न के अभाव का।

आज तीन साल से
ऐसी ही भयानक खबरें
ऐसे ही भयानक हाल
ऐसी ही कठोर धमकी
ऐसे ही निर्लज्ज दावे
कितने भयंकर सत्य
कितने भयंकर झूठ
धावे से करते हैं मानव के मन पर।

किन्तु हाय
मानव के मन की क्या बात है
देखता है सुनता है सहता है, इनको वह
और खूब गौरव से
कहता है इनको वह।
मंगल विधाता हे,
वह दिन क्या न आयेगा
आज के इन दैनिकों की
प्रतियों को छिपायेगा
मानव जब
अधीर होकर
आगे की पीढ़ियों की
छाती को न छेदें ये
अपना भयानक भेद उन तक न भेदें ये।

आज का हमारा दैनिक
कितना अपठ्य है
आज का हमारा मानव
कितना सुसंस्कृत है
कितना महान है
कितना असभ्य है!

9 अगस्त, 1944, गांधी पंचशती से